# तैत्तिरीयोपनिषद् से एक श्लोक

प्राण ब्रह्म है। वस्तुतः, यहाँ समस्त जीवों की उत्पत्ति प्राण से ही होती है,
वे प्राण के कारण जीवित रहते हैं, और जब वे प्रयाण करते हैं
तो प्राण में ही प्रवेश करते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद् ३.३.१; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।